नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेवड़ी कल्चर : सुप्रीम कोर्ट की चिंता का संज्ञान लें

मुफ्त सुविधाओं और चुनावी रेवड़ियों की राजनीति पर सर्वोच्च न्यायालय की हालिया टिप्पणी ने भारतीय लोकतंत्र के सामने खड़े एक गंभीर प्रश्न को फिर से केंद्र में ला दिया है. मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने जिस स्पष्टता और कठोरता के साथ राज्यों को आईना दिखाया है, वह केवल कानूनी टिप्पणी नहीं, बल्कि आर्थिक और नैतिक चेतावनी भी है. न्यायालय ने पूछा है कि क्या करदाताओं के धन का उपयोग अस्पताल, विद्यालय और सड़कों जैसे बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए नहीं होना चाहिए. जब अनेक राज्य राजस्व घाटे से जूझ रहे हैं, तब चुनाव के समय स्कूटी, कपड़े, मुफ्त बिजली और अन्य वस्तुएं बांटना किस प्रकार की वित्तीय समझदारी को दर्शाता है. यह प्रश्न केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास की दिशा से जुड़ा हुआ है.

लोकतंत्र में कल्याणकारी योजनाएं आवश्यक हैं. निर्धनों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सहायता देना राज्य का दायित्व है. किंतु सहायता और तुष्टीकरण के बीच एक महीन रेखा होती है. जब बिना किसी अंतर के सक्षम और असक्षम सभी को समान रूप से मुफ्त सुविधाएं दी जाती हैं, तो यह सामाजिक न्याय नहीं, बल्कि वोट की राजनीति प्रतीत होती है. सर्वोच्च न्यायालय ने ठीक ही कहा कि जो लोग भुगतान करने में समर्थ हैं, उन्हें भी मुफ्त लाभ देना अंततः उन गरीब बच्चों के अधिकारों पर आघात है जिन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सस्ती चिकित्सा की आवश्यकता है.

सबसे गंभीर प्रश्न कार्य संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभाव का है. यदि नागरिकों को यह संदेश दिया जाए कि श्रम और उत्पादन के बिना भी जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं निरंतर मुफ्त मिलती रहेंगी, तो परिश्रम की प्रेरणा क्षीण हो सकती है. किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसकी कार्य संस्कृति, उद्यमिता और उत्पादकता पर निर्भर करती है. मुफ्त की आदत यदि मानसिकता बन जाए, तो यह आत्मनिर्भरता की भावना को कमजोर करती है. चुनाव से ठीक पहले की जाने वाली अचानक घोषणाएं भी लोकतांत्रिक नैतिकता पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं. जब दरें और बजट पूर्व निर्धारित होते हैं, तब अचानक खजाना खोल देना क्या जनहित का निर्णय है या मतदाताओं को प्रभावित करने का प्रयास. तमिलनाडु विद्युत वितरण निगम से जुड़े मामले में मुफ्त बिजली के कारण बढ़ते वित्तीय बोझ ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऐसी नीतियों का भार अंततः सार्वजनिक उपक्रमों और करदाताओं पर ही पड़ता है.

राज्य सरकारों को यह समझना होगा कि अल्पकालिक लोकप्रियता और दीर्घकालिक विकास में से किसी एक का चयन करना पड़ता है. सुदृढ़ बुनियादी ढांचा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और रोजगार सृजन ही स्थायी समृद्धि का मार्ग हैं. यदि संसाधन सीमित हैं, तो प्राथमिकताएं भी स्पष्ट होनी चाहिए. सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी को राजनीतिक हस्तक्षेप के रूप में नहीं, बल्कि वित्तीय अनुशासन और उत्तरदायित्व की पुकार के रूप में देखा जाना चाहिए. लोकतंत्र में मतदाता भी उतने ही उत्तरदायी हैं जितनी सरकारें. उन्हें यह विचार करना होगा कि क्या तात्कालिक लाभ दीर्घकालिक विकास की कीमत पर स्वीकार्य है.

समय आ गया है कि राजनीति लोकलुभावन वादों से ऊपर उठकर जवाबदेह शासन की ओर अग्रसर हो. कुल मिलाकर मुफ्त की संस्कृति से बाहर निकलकर परिश्रम, उत्पादकता और न्यायसंगत कल्याण की दिशा में कदम बढ़ाना ही राष्ट्रहित में है. जाहिर है सुप्रीम कोर्ट की इन टिप्पणियों और चिंता का राज्य और केंद्र सरकारों ने संज्ञान लेना चाहिए.

इंदौर और एआई : अवसर, तैयारी और विकास की नई दिशा

शंकर ललवानी
(सांसद, इंदौर)

नई दिल्ली में आयोजित वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत तकनीकी विकास की वैश्विक धारा में अब केवल सहभागी नहीं, बल्कि नेतृत्व की भूमिका निभाने की तैयारी कर रहा है. जिस प्रकार प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में तकनीक और इंटरनेट ने देश में डिजिटल परिवर्तन की नींव रखी थी, उसी प्रकार आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस- एआई) एक व्यापक और दीर्घकालिक परिवर्तन का आधार बन रही है.

कंप्यूटर क्रांति के शुरुआती दौर में भी अनेक आशंकाएँ व्यक्त की गई थीं-रोज़गार पर प्रभाव, तकनीक की सीमित पहुँच और सामाजिक असमानता की संभावना. किंतु समय के साथ यह सिद्ध हुआ कि डिजिटलीकरण ने भारत की अर्थव्यवस्था, प्रशासन, शिक्षा और व्यापार व्यवस्था को नई ऊर्जा प्रदान की. बैंकिंग सेवाओं का डिजिटल रूपांतरण, मोबाइल संचार का तीव्र प्रसार और वैश्विक आईटी क्षेत्र में भारत की अग्रणी भूमिका उसी परिवर्तन का परिणाम हैं. आज एआई उसी ऐतिहासिक यात्रा का उन्नत चरण है, जो केवल कार्यों को स्वचालित नहीं करता, बल्कि निर्णय क्षमता को भी सशक्त बनाता है.

शिखर सम्मेलन में नीति-निर्माताओं, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों, उद्योग प्रतिनिधियों और शिक्षाविदों ने नैतिक एआई, डेटा संरक्षण, साइबर सुरक्षा, मशीन लर्निंग तथा स्मार्ट प्रशासन जैसे विषयों पर गंभीर विमर्श किया। यह स्पष्ट हुआ कि एआई केवल तकनीकी उन्नयन का माध्यम नहीं, बल्कि सुशासन और समावेशी विकास का सशक्त उपकरण है.

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न मंचों पर यह स्पष्ट किया है कि 'भारत एआई को मानव-केंद्रित दृष्टिकोण से विकसित करेगा।' प्रधानमंत्री जी का मानना है कि 'एआई 21वीं सदी की विकास यात्रा में भारत को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखता है, बशर्ते इसका उपयोग नैतिकता और जिम्मेदारी के साथ किया जाए।'

भारत सरकार 'डिजिटल इंडिया' की आधारशिला पर 'एआई-सक्षम भारत' की दिशा में आगे बढ़ रही है। प्रशासनिक तंत्र में डेटा-आधारित निर्णय प्रणाली लागू की जा रही है, नागरिक सेवाओं को ऑनलाइन और अधिक पारदर्शी बनाया जा रहा है, तथा शासन में दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है. उद्देश्य यह है कि किसान, छात्र, महिला उद्यमी, लघु उद्योग और युवा- सभी को तकनीकी अवसरों का समान लाभ मिले.

इस राष्ट्रीय परिदृश्य में इंदौर के लिए अवसर विशेष महत्व रखते हैं. स्वच्छता और शहरी प्रबंधन में अग्रणी पहचान स्थापित करने के बाद अब इंदौर के सामने एआई आधारित नवाचार और अनुसंधान का केंद्र बनने की संभावना है. शहर के शैक्षणिक संस्थान, उभरता स्टार्टअप पारितंत्र और सक्रिय प्रशासन इसे मध्य भारत के तकनीकी केंद्र के रूप में स्थापित कर सकते हैं. यदि उद्योग-शिक्षा साझेदारी और नगर प्रशासन में डेटा-संचालित प्रणालियों को व्यापक रूप से अपनाया जाए, तो इंदौर 'स्मार्ट सिटी' की अवधारणा को व्यवहारिक रूप दे सकता है.

इंदौर में एआई के व्यावहारिक उपयोग अनेक क्षेत्रों में दिखाई देने लगे हैं. शिक्षा में व्यक्तिगत अधिगम प्रणाली विद्यार्थियों को उनकी क्षमता और आवश्यकता के अनुरूप सामग्री उपलब्ध करा सकती है. स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई आधारित निदान प्रणाली रोगों की प्रारंभिक पहचान में सहायक सिद्ध हो सकती है. कृषि में मौसम पूर्वानुमान, मृदा विश्लेषण और बाजार डेटा का वैज्ञानिक उपयोग उत्पादन क्षमता बढ़ा सकता है. प्रशासन में डेटा-संचालित निगरानी और सेवा वितरण प्रणाली पारदर्शिता को मजबूत कर सकती है.

एआई को केवल बड़ी तकनीकी कंपनियों तक सीमित समझना उचित नहीं है। यह व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में उपयोगी हो सकता है. विद्यार्थी अध्ययन, शोध और विषय-वस्तु की बेहतर समझ के लिए एआई टूल्स का उपयोग कर सकते हैं. छोटे और मध्यम उद्यम स्टॉक प्रबंधन, ग्राहक विश्लेषण, डिजिटल विपणन और लेखांकन में एआई आधारित सॉफ्टवेयर अपनाकर प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्राप्त कर सकते हैं. शहरी सुरक्षा में एआई-सक्षम निगरानी प्रणाली सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा को सुदृढ़ बना सकती है.

प्रधानमंत्री मोदी का यह भी विचारा रहा है कि 'स्किल डेवलपमेंट और री-स्किलिंग भविष्य की अर्थव्यवस्था की कुंजी है.' एआई के संदर्भ में यह और अधिक प्रासंगिक हो जाता है. तकनीकी परिवर्तन के साथ कौशल विकास को समान गति से आगे बढ़ाना आवश्यक है, ताकि युवा पीढ़ी नई संभावनाओं के अनुरूप स्वयं को तैयार कर सके.

इतिहास यह दर्शाता है कि प्रत्येक तकनीकी क्रांति प्रारंभ में चुनौतियाँ लेकर आती है, किंतु दीर्घकाल में वह नए अवसरों का द्वार खोलती है. एआई भी अपवाद नहीं है. इसे आशंका के बजाय अवसर की दृष्टि से देखना होगा. सरकार के साथ साथ नागरिक भी उद्योग, शिक्षण संस्थान और नागरिक समाज यदि समन्वित रूप से कार्य करें, तो यह परिवर्तन केवल तकनीकी उन्नति तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रगति का भी आधार बनेगा.

अब समय केवल विमर्श का नहीं, बल्कि व्यापक स्तर पर एआई को अपनाने का है. तकनीक को जिम्मेदारी और दूरदर्शिता के साथ अपनाकर ही भारत और इंदौर भविष्य की इस नई दिशा में सशक्त और प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं.

मध्य क्षेत्र की डायरी

मध्यप्रदेश कांग्रेस को शिल्पकार की दरकार

दिलीप झा

मध्यप्रदेश कांग्रेस की राजनीति में भीषण उथल पुथल चल रहा है. गुटबाजी को संभालना किसी वरिष्ठ नेता के लिए मुश्किल ही नहीं कठिन है. कहा जाता है कि राजनीति में अक्सर सेहरा उनके सिर बंधता है जो अंत में कमान संभालते हैं, लेकिन जीत की असल इबारत वो लिखते हैं जो कठिन समय में संगठन की जमीन तैयार करते हैं. कांग्रेस सूत्र बताते हैं कि मध्य प्रदेश कांग्रेस के संदर्भ में यह विश्लेषण पूरी तरह सटीक है कि 2018 में जो कमलनाथ की सरकार बनी थी, वह वास्तव में अरुण यादव के साढ़े चार साल के अथक परिश्रम और संघर्ष का परिणाम थी. यह एक राजनीतिक तथ्य है कि जब कांग्रेस प्रदेश में हाशिए पर थी अर्थात सुखाड़ के हालात बने हुए थे तब अरुण यादव ने प्रदेश अध्यक्ष के रूप में संगठन की कमान संभाली. उन्होंने साढ़े चार साल तक पूरे प्रदेश के संपूर्ण जिलों (50+) की धूल छानी और ऐतिहासिक पदयात्राएं कीं. उन्हीं के कार्यकाल में कार्यकर्ता सड़कों पर उतरा और भाजपा के खिलाफ माहौल बना. 2018 की जीत उसी साढ़े चार साल की तपस्या का फल थी, जिसका लाभ पार्टी को मिला.

अरुण यादव के पास स्वर्गीय सुभाष यादव की वह विरासत है जिसने मध्य प्रदेश में 'सहकारिता आंदोलन' खड़ा किया. सहकारिता के माध्यम से उनका जुड़ाव केवल पिछड़ा वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्राह्मण, क्षत्रिय (ठाकुर), लोधी और खाती समाज सहित हर वर्ग के किसान परिवारों के साथ उनका सीधा और पारिवारिक रिश्ता है. राजनीति को करीब से समझने वालों का कहना है कि यह वह सामाजिक पूंजी है जो 2028 और 2029 में कांग्रेस की नैया पार लगा सकती है.

कांग्रेस के जमीन से जुड़े नेताओं का कहना है कि अरुण यादव का प्रभाव किसी एक क्षेत्र की भौगोलिक सीमाओं में कैद नहीं है. मालवा और निमाड़ से लेकर विंध्य क्षेत्र, बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल (विशेषकर भिंड) तक, उनकी स्वीकार्यता एक 'मास लीडर' के रूप में है. वे सही मायनों में 'अखिल मध्य प्रदेश' के चेहरे हैं.

अगर हम 2018 और 2019 के चुनावों के सूक्ष्म विश्लेषण को देखें, तो यह स्पष्ट है कि कांग्रेस को सबसे अधिक लाभ उन्हीं वर्गों और क्षेत्रों से मिला जहां अरुण यादव का प्रभाव सक्रिय था. आगामी 2028 की विधानसभा और 2029 की लोकसभा की बड़ी लड़ाई जीतने के लिए कांग्रेस को उनके अनुभव, बेदाग छवि और सांगठनिक पकड़ की सख्त जरूरत है. भाजपा के 'यादव कार्ड' और उनकी 'सोशल इंजीनियरिंग' को ध्वस्त करने की क्षमता केवल अरुण में है.

दिग्विजय सिंह जैसे दिग्गज के बाद, राज्यसभा में एक ऐसे नेता की आवश्यकता है जो सदन में दहाड़ सके और जमीन पर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा सके. पूर्व केंद्रीय मंत्री और सांसद के रूप में अरुण यादव का अनुभव राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को मजबूती देता है. मध्य प्रदेश की जनता और कांग्रेस पार्टी के लिए वर्तमान में उनसे श्रेष्ठ और कोई विकल्प नहीं है. वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि लोकसभा में कांग्रेस के प्रतिपक्ष नेता राहुल गांधी मध्य प्रदेश की सामाजिक समरसता भाव रखने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं की पुकार को सुनें. कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता बताते हैं कि अरुण यादव को राज्यसभा भेजना केवल एक नियुक्ति नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस की सत्ता में वापसी का 'शंखनाद' होगा. मध्य प्रदेश के कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पार्टी के भविष्य के लिए इससे अधिक उपयुक्त विकल्प और कोई नहीं है.

अंदर से खोखला है कांग्रेस संगठन का किला

राजनीति के कुरुक्षेत्र में राहुल गांधी अकेले लड़ रहे हैं, क्योंकि उनके पीछे खड़ा संगठन का किला अंदर से खोखला हो चुका है. कांग्रेस कार्यालयों में राजनीतिक नियुक्तियों ने संगठन का बेड़ा गर्क कर दिया है. सिर्फ मेरा आदमी और तेरा आदमी अब वक्त आ गया है कि इन दफ्तरों से 'राजनीतिक चश्मे' वाले कर्मचारियों को बाहर किया जाए और प्रबंधन की कमान भारतीय सेना के सेवानिवृत्त अधिकारियों को सौंपी जाए. एक राजनैतिक कार्यकर्ता या नेता जब दफ्तर की जिम्मेदारी संभालता है, तो वह 'गुटबाजी' और 'पहुंच' देखता है. लेकिन एक रिटायर्ड फौजी केवल अनुशासन और समयबद्धता देखता है .आज कांग्रेस दफ्तर का हाल यह है कि कार्यकर्ता के पत्र की 4 साल तक पावती नहीं मिलती. देश का राष्ट्रपति भवन 50 पन्नों का जवाब एक महीने में दे देता है, लेकिन कांग्रेस का स्टाफ 'पाषाण युग' की नींद सो रहा है. इसलिए अगर पीसीसी में एक रिटायर्ड सैन्य अधिकारी बैठा होगा, तो वह सुनिश्चित करेगा कि हर कॉल का 'कॉल बैक' हो और हर पत्र का जवाब समय सीमा के भीतर मिले, जैसा कि भाजपा के गृहमंत्री के दफ्तर में होता है. आज की आधुनिक संचार नीति के दौर में भी कार्यकर्ताओं की उपेक्षा करना केवल लापरवाही नहीं, बल्कि 'भीतरघात' है.

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी पर विशेष आलेख

हमारी आत्मा की आवाज है मातृभाषा

डॉ. अशोक कुमार भार्गव, पूर्व आईएएस

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में लिखने पढ़ने सीखने समझने संवाद स्थापित करने का अधिकार है क्योंकि मातृभाषा हमारी आत्मा की आवाज होती है. वह मात्र शब्दों का समूह या जाल नहीं होती वरन हमारी संस्कृति, संस्कार, मूल्य, परंपरा, विरासत और अस्मिता की पहचान होती है. वह हमारी सोच,समझ, भाव, विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जो हमें एक दूसरे से जोड़ती है, सामाजिक गठन, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक उन्नयन में सहायक होती है.

सामान्य अर्थों में बच्चा जन्म लेने के बाद पहली बार जिस ध्वनि स्पर्श या संकेत में मां शब्द कहता है वही उसकी मातृभाषा होती है जो वह मां के झूले पालने में, मां की पवित्र गोद में धीरे-धीरे सीखता है. यही उसके भावनात्मक लगाव, सामाजिक जुड़ाव,जटिल मानसिक परिस्थितियों को समझने, संज्ञानात्मक विकास और रचनात्मकता का आधार बनती है.

21 फरवरी को पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है. इस दिवस को मनाने की पृष्ठभूमि सन 1952 में तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान में बांग्लादेश में हुए भाषाई आंदोलन से संबंधित है. सन् 1947 में पाकिस्तान के जन्म के बाद उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया और पूर्वी पाकिस्तान में भी उर्दू को ही राष्ट्रभाषा के रूप में थौपने का प्रयास किया किंतु पूर्वी पाकिस्तान ने अपनी मातृभाषा बांग्ला को आधिकारिक भाषा घोषित करने की मांग की जिसे पाकिस्तान ने ठुकरा दिया फल स्वरुप 21 फरवरी 1952 को ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों ने प्रदर्शन किया जिसे पाकिस्तान की पुलिस ने प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करते हुए बर्बरता पूर्वक समाप्त कर दिया जिसमें अनेक छात्र मारे गए. बांग्लादेश में यह दिवस दुखद दिवस के रूप में मनाया जाने लगा. मातृभाषा के इस भाषाई संघर्ष को मान्यता देने के लिए वैश्विक स्तर पर मातृभाषा दिवस मनाने की मांग कनाडा के बंगाली नागरिक रफीकुल इस्लाम ने की थी जिसे यूनेस्को ने स्वीकार कर किया और 21 फरवरी 2000 को पहला विश्व मातृ भाषा दिवस मनाया गया.

इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता का संरक्षण, बहुभाषिकता के प्रति चेतना, लुप्त प्राय भाषाओं को संरक्षित करना और मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहित करना है. वास्तव में यह दिवस अपनी मातृभाषा के प्रति निष्ठा, वचनबद्धता,ममत्व, लगाव और भावनात्मक जुड़ाव के प्रकटिकरण का स्मारक दिवस है.

यूनेस्को का अनुमान है कि दुनिया में बोली जाने वाली 7000 भाषाओं में से 40% भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं. डिजिटल क्रांति के इस दौर में सोशल मीडिया में मात्र 100 से भी कम भाषाओं का उपयोग हो रहा है. अन्य भाषाएं इस दौर की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ नहीं हो पा रही हैं. यह मानवीय सभ्यता के लिए एक गंभीर संकट है. वैश्वीकरण, शिक्षा और मीडिया में प्रमुख भाषाओं के प्रभुत्व, औपनिवेशिक विरासत, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं तथा आर्थिक कारणों से समुदायों के विस्थापन, क्षेत्रीय तथा अल्पसंख्यक भाषाओं पर तथाकथित पिछड़ेपन या अशिक्षित होने के सांस्कृतिक लांक्षन तथा लिखित में भाषाओं की स्वयं की लिपि न होने के के कारण भाषाएं विलुप्त हो रही हैं. इनके साथ ही संपूर्ण बौद्धिक सांस्कृतिक विरासत, हमारी पहचान, प्रकृति, गणित, दर्शन, लोकगीत, लोक कथाएं, कहावतें मुहावरे, कविताएं, गीत, दादी,नानी की कहानियां,अभिव्यक्ति की अनूठी तकनीक आदि सभी भी विलुप्त हो रही हैं.

इसलिए भाषाई विविधता और लुप्त हो रही भाषाओं के संरक्षण, उनके पुनरुद्धार की आवश्यकता, मातृ भाषाओं का सम्मान और मातृभाषा में बोलने के मूल अधिकार की रक्षा करना आज सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती है।

इसी वास्तविकता को रेखांकित करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 2022 - 2032 को अंतरराष्ट्रीय स्वदेशी भाषा दशक के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। यह दशक इसलिए महत्वपूर्ण है कि हम विलुप्त हो रही भाषाओं के संरक्षण के लिए वैश्विक स्तर पर सकारात्मक पहलों को अंजाम दें क्योंकि भाषाई विविधता हमारी ताकत है विरासत है।

महात्मा गांधी ने भी 1937 में वर्धा में नई तालीम के प्रस्ताव में बच्चों को अनिवार्य निशुल्क शिक्षा के साथ प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देने और कौशल उन्नयन पर बल दिया था।

भारत के राष्ट्रपति और मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था कि यदि से मैंने मातृभाषा में विज्ञान और गणित की शिक्षा प्राप्त नहीं की होती तो मैं आज इतना बड़ा वैज्ञानिक नहीं बन सकता था। अगर विज्ञान को आम जनता तक पहुंचाना है तो विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है, वे जल्दी सीखते हैं और अपनी संस्कृति से जुड़ते हैं। हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी मातृभाषा स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12177

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	■	4	5	6	■
7			■	8			9
10			■		■	11	
■	■	■	12	■	13		
14		■	15	16		■	
	■	17	■	18		■	■
19	20		■	21		22	23
24					■	25	

बाएं से दाएं

1. जो, यदि (उर्दू) 4. सोचना, अनुमान 6. हद दरजे का, अंतिम 8. कलंकित, दागवाला (उर्दू) 10. सुंदर स्त्री, कामिनी 11. लीन, लिप्त 13. नील या कोयले से किसी अंग पर बना चिन्ह, चुभाना, टैटू 14. बदला, इनाम (उर्दू) 15. उदास, खिन्न (उर्दू) 18. स्त्री, मनोहारिणी स्त्री 19. प्रमाण-पत्र प्रामाणिक कथन (उर्दू) 21. कल से ढला हुआ सिक्का 24. अधिक भीगा हुआ 25. गर्वोक्ति, हक, न्याय हेतु न्यायालय में दिया गया प्रार्थना पत्र

ऊपर से नीचे

1. स्थिर, गतिहीन, अटल 2. विष, जहर 3. लीन होना, विहार करना, अनुरक्त होना 4. आक 5. नगीना, अदद 6. गायब, लुप्त, खाली, गैरमौजूद (उर्दू) 9. लाली, सुर्खी, एक प्रकार का धान 12 अधीन, वशवर्ती, आज्ञाकारी 13. गड़बड, संदिग्ध 14. राजनीति (उर्दू) 16. सूर्य, दिनकर 17. आदर, साहित्य (उर्दू) 20. पुरुष, मर्द, मनुष्य 22. पितामह, बड़ा भाई 23. कण, दाना, कोणाकार टुकड़े

Solution 12176

आ	द	म	■	भा	र	ती	य
शु	■	न	गा	ड़ा	■	■	■
तो	प	ची	■	■	इ	न्सा	न
ष	■	ता	ना	बा	ना	■	के
■	ला	■	टा	ल	म	टो	ल
बे	ग	म	■	स	■	क	■
का	त	ना	■	खा	स	■	जी
री	■	ही	ना	■	ई	शा	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा. राज्य, सम्मान की प्राप्ति होगी. गृहकार्यो में व्यस्तता रहेगी. धन लाभ का योग है. मन में प्रसन्नता रहेगी. वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है. व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा. रोजगार में सफलता मिलेगी. भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. वर्ष के अन्त में व्यवहार कुशलता बढेगी. मित्र के कारण कार्यो में व्यवधान आयेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा. घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी. धन लाभ का योग है. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा. रोजगार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में ऊहापोह की स्थिति निर्मित होगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को साहसिक पराक्रम में वृद्धि होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को निजी दायित्वों की पूर्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हष्टपुष्ट और मधुरभाषी, परिश्रमी, चतुर होगा, बुद्धिमान, व्यवसायिक दृष्टिकोण वाला होगा, सबको लोकप्रिय होगा, 8 वर्ष की आयु तक तकलीफ उठायेगा, बाद में अच्छा रहेगा, विद्या के क्षेत्र में रूचि रहेगी, खेलकूद के प्रति विर्शष आकर्षित रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

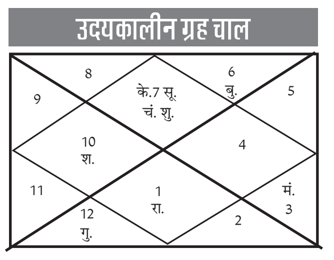

मेष- समय के अनुसार तौर तरीकों में बदलाव लाभकारी रहेगा, मनोरंजक यात्रा की योजना बनेगी, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, व्यवसनों से दूर रहें.

वृषभ- घरेलू मामले सुलझाने में सफलता मिलेगी, मेलजोल लाभकारी रहेगा, किसी पारिवारिक समारोह में भाग लेना होगा, माता पिता का सहयोग रहेगा.

मिथुन- विवादास्पद मामले सुलझेगें, कोई मूल्यवान वस्तु खोने का डर है, अतः अपने सामान की सुरक्षा व्यवस्था स्वयं करें, संतान की चिन्ता दूर होगी.

कर्क- ऐसा कोई कार्य बनेगा, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति दृष्टिकोण और समृद्धि में वृद्धि होगी, दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा, अधिक जल्दबाजी न करें.

सिंह- आर्थिक एवं व्यवसायिक दिशा में किया गया प्रयास सार्थक होगा, संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता प्राप्त होने का योग है.

कन्या- मित्रों का समागम होगा, यथेष्ठ सहयोग मिलेगा, मानसिक रूप से आप स्वस्थ्य रहेगें, नवीन कार्यों की योजना पर विचार विमर्श होगा.

तुला- किसी रिश्तेदार या पड़ौसी से विवाद होगा, मांगलिक कार्यों के प्रति उत्साह बना रहेगा, विरोधी वर्ग पराजित होगा, शुभ सूचना मिलेगी.

वृश्चिक- भूमि भवन के क्रय-विक्रय से लाभ होगा, मातृपक्ष से शुभ समाचार मिलेगा, स्वास्थ्य संबंधी शिथिलता रहेगी, कार्यो में व्यस्तता रहेगी.

धनु- यात्रा में सावधानी रखें, व्यर्थ की परेशानी और तनाव से बचें, जीवनसाथी का सहयोग रहेगा, युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे.

मकर- ले देकर काम करने की योजना सफल होगी, अधिकारियों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा, धन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, मनोरंजक स्थल की सैर होगी.

कुम्भ- वैचारिक गतिरोध दूर होगा, कारोबारी यात्रा सफल रहेगी, मन प्रसन्न रहेगा, मामा पक्ष से लाभ होगा, पारिवारिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मीन- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, रूखे व्यवहार से परिचित नाराज हो सकते हैं, यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी रखें, पूज्य व्यक्ति की चिन्ता रहेगी.

पंचांग

रा.मि. 02 संवत् 2082 फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी शनिवासरे दिन 1/30, रेवती नक्षत्रे रात 7/45, शुभ योगे शाम 4/41, विष्टि करणे सू.उ. 6/21, सू.अ. 5/39, चन्द्रचार मीन रात 7/45 से मेष, पर्व- वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 12,2,3,6,7,10 अ.रा. 1,4,5,8,9,11 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी को रेवती नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, लालमिर्च, अजवाईन, जाबित्री के भाव में तेजी होगी, चांदी, रूई, सरसों, सूरजमुखी के भाव में मंदी होगी, बाजार का रूख देखकर व्यापार करें. भाग्यांक 4110 है.

SUDOKU 7309

				1			6	
					5			
2		3	9			8		
6							5	
			8		3			
	1							4
		7			1	3		9
			2					
	5			6				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7308

7	6	8	2	1	9	3	4	5
2	1	5	6	3	4	8	7	9
3	4	9	5	7	8	6	1	2
5	7	4	8	6	1	9	2	3
9	2	1	3	4	5	7	8	6
8	3	6	7	9	2	1	5	4
1	5	3	4	8	5	2	9	7
4	9	7	1	2	3	5	6	8
6	8	2	9	5	7	4	3	1